REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2025

'पाली' और सांप्रदायिकता के प्रश्न

ज्योति सिन्हा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

प्रस्तावना:

यूँ तो हिन्दी कहानी में आइडिया आधारित कहानियों की कमी नहीं है। और बहुत सारी अच्छी कहानियाँ इस प्रविधि से लिखी गई हैं। यशपाल जी की बहुतरी कहानियाँ इसका अच्छा उदाहरण हैं। किन्तु भीष्म साहनी के यहाँ जो कहानियाँ आइडिया आधारित प्रतीत होती हैं, उनके सचेत पाठ से उनके अनुभव की प्रामाणिकता को परखा जा सकता है। कहने का अर्थ है कि आदर्शवाद को स्थापित करने के लिए रचनाकार विचार प्रधान कहानियाँ लिख सकता है। इसमें कोई विशेष समस्या नहीं तब तक नहीं है जब तक कि उसके कहानीपन को क्षति न पहुँचे। क्योंकि यदि कहानी सीधी रेखा में चलती चली जाए तो वह पाठकों को बांधे रखने में विफल हो जाती है। उसका पूर्वानुमानित हो जाना कहानी के रोमांच को शिथिल कर देता है। इसी दृष्टि से ठेठ आइडिया आधारित कहानियों और प्रचलित मुहावरों से काम लेती कहानियों की आलोचना की जाती रही है।

भीष्म साहनी की कहानियों पर विचार करते हुए यह आक्षेप कदाचित लगाए जा सकते हैं कि वे खास आदर्श का पीछा करती हुई कहानी के स्वधर्म को विस्मृत कर देती हैं लेकिन यदि उनके कथा संसार का बारीकी से अवलोकन किया जाए तो उनकी कहानियों का मूल जीव द्रव्य कथाकार भीष्म साहनी का विराट अनुभव संसार है, जिसने उनकी जीवन–दृष्टि और कलात्मक बोध का निर्माण किया है। कलात्मक बोध की निर्मिति में जहाँ एक ओर उनकी जनपक्षधर वैचारिकी है तो दूसरी ओर जनसामान्य से उनका रागात्मक जैविक सम्बन्ध है। वैचारिकी उनके कहानीकार को आच्छादित नहीं करती बल्कि वह जीवनानुभवों की सहचर है। इसलिए भीष्म साहनी की कहानियाँ जीवन की जटिलता, अंतर्विरोध और आत्मसंघर्ष का विरल चित्रण कर पाने में सफल साबित होती है। इस मान्यता को परखने के लिए उनकी अनेक कहानियाँ विचारणीय हैं पर इस आलेख में मैं उनकी अपेक्षाकृत अल्पचर्चित कहानी 'पाली' का विश्लेषण करूँगी।

'पाली' कहानी 1989 ई. में प्रकाशित हुई थी। कहानी विभाजन के बाद की एक त्रासद घटना पर केंद्रित है। होता कुछ यूँ है कि एक हिन्दू दंपति का बालक तक्सीम के बाद सरहद पार करते हुए बीच में ही कहीं खो जाता है और उस बालक को निसंतान मुस्लिम दंपति गोद ले लेती है। बालक 'पाली' से नामांतरित होकर 'इल्ताफ' हो जाता है। लेकिन विडंबना यह है कि जिस उम्र का वह बालक है, उसे न तो नामांतरण का अर्थ समझ आ सकता है और न ही धर्मांतरण का! वह जैसे पाली थी, वैसे ही इल्ताफ। उसका बाल मानस धर्म को नहीं माता–पिता को जानता–समझता था। माता–पिता उसका धर्म थे। माता–पिता उसके इष्ट थे, जैसे कि हर शिशु और बालक–बालिका के लिए होते हैं। कहानी के मुख्य संघर्ष पर आने से पूर्व ही यह कह देने की

जरूरी जान पड़ता है कि माता–पिता अपने बच्चे को वे सबकुछ दे देना चाहते हैं, जिन चीजों ने उन्हें खुद आर्थिक, सामाजिक और अध्यात्मिक स्तर पर समृद्ध किया। इसी में धर्म भी आता है। वह आध्यात्मिक ऊर्जा जो जीवनपर्यंत निराशा से उनके बच्चे को उबार सकेगी, इस उम्मीद में दुनिया का हर माँ–बाप ऐसा करता है।

बाह्य स्तर पर 'पाली' के जीवन में धर्म का प्रश्न हिन्दू–मुस्लिम धर्म का प्रतीत होगा लेकिन इस कहानी के अंतःस्थल में मुख्य संघर्ष मातृ–पितृ–धर्म का है। मनोहर और उसकी पत्नी का पुत्र होते हुए 'पाली' पाली है और शकूर और जैनब का पुत्र होते हुए वह 'इल्ताफ' लेकिन धर्म के बाह्य आवरण के पीछे असीम लगाव और प्रेम का कारण तो संतान और माता–पिता का संबंध ही है। यह इस कहानी का मरकज़ है!

कहानी का मूल कथ्य ये है कि अपने जैविक माता–पिता मनोहर और कौशल्या से बिछड़ने के बाद पाली शकूर और जैनब को मिल जाता है। निःसंतान जैनब के लिए यह किसी देन की तरह होता है। वह बड़े लाड–प्यार से पाली उर्फ इल्ताफ को रखती है। यूँ कि उसका अपना पुत्र हो। लेकिन कालांतर में पाली के वास्तविक माता–पिता उनके घर तक अपने बच्चे को ढूंढते–ढूंढते पहुँच जाते हैं। कहानी में कई मार्मिक उतार–चढ़ाव आते हैं और इल्ताफ़ को वापस हिन्दुस्तान ले आते हैं उसके माता–पिता। लेकिन बालमन यह कैसे जाने की जिंदगी में इंसानियत, प्रेम और विश्वास से बढ़कर धर्म होता है। इसलिए जो पूजा–पाठ की रीति–नीति उसने अपने दत्तक माता–पिता से सीखा था, वह यहाँ वर्जित कर दिया जाता है। अबोध पाली के लिए यह स्थिति उसकी भाषा, उसका संसार छीन जाने की तरह होता है। सामाजिक पहचान और सामाजिक मूल्यों का शाश्वत मानवीय मूल्यों से जो टकराव उत्पन्न होता है इस सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रिया में वह इस कहानी को अप्रतिम बना देता है।

जैसा कि पूर्व में ही हमने कहा कि भीष्म साहनी आइडिया आधारित शिल्प में कहानी नहीं कहते। इसके साक्ष्य के बतौर आलोच्य कहानी 'पाली' का उल्लेख मैंने ऊपर किया है। कहानीकार जीवनगत अनिश्चितताओं और अंतर्विरोधों को कहानी के प्रारम्भ में ही स्वीकार करता है। ठीक यहीं कहानी के पूर्वानुमानित होने की संभावना खंडित हो जाती है। द्रष्टव्य है : "मनोहरलाल और उसकी पत्नी को भी एक वक्त ऐसा ही भ्रम हुआ कि एक बहुत बड़ा संकट टल गया है, और जिंदगी में जो गुंझल पड़ गया था, वह खुल गया है। पर गुंझल न तो कथा–कहानी में पूरी तरह सुलझ पाते हैं, न जीवन में। एक खुलता है तो दूसरा पड़ने लगता है। कहानी कभी भी खत्म नहीं होती। इतनी ही गनीमत है कि जिंदगी चलती रहती है, उसकी गति थमती नहीं और हर मोड़ पर वह अपना कोई नया रूप, और कोई नया प्रश्नचिह्न हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत करती रहती है।"[1]

कहानी में यह स्पष्टता से वर्णित है कि पाली को शकूर और जैनब ने छल–प्रपंच अथवा किसी धोखे से हड़पा नहीं था और यह भी कि मनोहर और कौशल्या ने अपना बच्चा खो दिया था शरणार्थियों की गाड़ी बदलने के क्रम में। शरणार्थियों की भयानक भीड़ और लागतार हो रही हिंसा के बीच छोटे से बालक को उसके माता–पिता कहाँ और कब तक ढूंढते। इसलिए वे शरणार्थियों के समूह के साथ ही चले जाते हैं। भीष्म साहनी जी के ही शब्दों में : "सीमा तक पहुँचते–पहुँचते अँधेरा पड़ने लगा था। जब एक जगह लारियाँ रुकीं तो मनोहरलाल लारी में से कूदकर सड़क पर आ गया और 'पाली'! 'पाली!' चिल्लाता हुआ सभी लारियों के सामने अपनी गुहार लगाने लगा। उसने एक–एक लारी में झाँक–झाँक कर देखा, पर कहीं से कोई उत्तर नहीं आया। आवाज मानो सूने बियाबानों में गूँजकर लौट आई। पाली का कहीं पता नहीं चला।.."[2] यहाँ उन मर्मस्थलों को स्पष्टता से प्रस्तुत कर देना उचित होगा जिनके जरिए यह स्पष्ट हो सके कि पाली किसी तथाकथित जिहाद का शिकार न हुआ था। चूंकि ऐसे संवेदनशील मामलों के सामान्यीकरण के जोख़िम से बच पाना बहुत मुश्किल होता है। पाली और शकूर का मिलना बिल्कुल संयोग था। शकूर को जब पाली रोता, पिता जी–पिता जी पुकारता हुआ मिलता है तो वो उसे सबसे पहले शरणार्थी शिविर की ओर ले जाता है : "चल मैं तुम्हें तेरे पिता जी के पास छोड़ आता हूँ ' कह उसका हाथ पकड़े वह उसे धीरे–धीरे अपने

साथ ले चला था। पहले वे उस स्थान की ओर गए जहाँ से शरणार्थियों की लारियाँ रवाना हुई थीं। उस वक्त सभी लारियाँ जा चुकी थीं और उड़ती धूल बहुत कुछ बैठ चुकी थी। उधर शरणार्थियों का कैम्प भी खाली पड़ा था। रात के अँधेरे में जब शकूर ने अपने टूटे–फूटे घर की ड्योढ़ी में कदम रखा था तो पाली उसके कन्धे से लगकर सो रहा था।"[3] तो यह पाली का शकूर और जैनब के परिवार में आगमन की परिस्थिति है। इस संदर्भ में शकूर और जैनब के बीच में बहुत मार्मिक संवाद संभव होता है : "छोड़ आओ इसे वहीं, जहाँ से उठाया है। किसी बदनसीब की आह हमें क्यों लगे?

'हमें क्यों लगेगी? हम तो पनाह दे रहे हैं' शकूर बुदबुदाया 'थाने में दिया तो वे इसे इसके माँ–बाप के पास थोड़े ही ले जाएँगे।"[4]

धर्मांतरण के किसी रीति–रिवाज़ के बिना ही वे पाली को अपनी संतान के रूप में अंगीकार कर चुके थे। किन्तु स्थानीय मौलवी ने जब बच्चे के सिलसिले में खोज पड़ताल की और काफिर की संतान आदि कहने लगा तो बच्चा छीन जाने के संकट को भांपते हुए जैनब मौलवी द्वारा कलमा पढ़वाने और सुन्नत करवाने की शर्त मान लेती है। यहाँ इस बिन्दु पर जैनब का स्वगत उल्लेखनीय है : "जैनब मौलवी के तर्क से झेंप गई। वह हैरान थी कि उसे इन बातों का ध्यान क्यों नहीं आया। उसे यह बालक न तो नापाक ही लगा था, न साँप का बच्चा ही।..मौलवी कलमा ही पढ़वाना चाहता है न, सुन्नतें ही करवाना चाहता है न, वह कल क्यों, भले आज ही कर दे। बच्चे को हमसे छीनेगा तो नहीं न। इसमें डरने की क्या बात है? उसने सिर का सारा बोझ उतारकर फेंक दिया और बच्चे को बाँहों में भरकर उसे बार–बार चूमने लगी।"[5]

वर्षों बाद जब मनोहर लाल पुलिस–प्रशासन की मदद से पाली को ढूंढ लेता है तथा पाली अपने पिता को एक तस्वीर के सहारे पहचान लेता है तो जैनब उसे अपने पिता के साथ जाने देने को तैयार हो जाती है। लेकिन इस स्थिति में सबसे बड़ा अवरोध मौलवी खड़ा करते हैं। मौलवी कहते हैं "अब यह मुसलमान का बेटा है, काफिर का बेटा नहीं है। अब यह कलमा पढ़ चुका है।.. अंदर का शोर बाहर भी सुनाई देने लगा होगा कि बाहर नारे गूँजने लगे: अल्लाह–ओ–अकबर"[6] इस स्थिति में जैनब और शकूर की प्रतिक्रिया भी विचारणीय है। जैनब मनोहरलाल को बच्चा सौंपते हुए कहती है, "पर एक शर्त पर बच्चा दूँगी..हर साल ईद के मौके पर इसे हमारे पास भेजोगे। महीना–भर यह हमारे पास रहेगा। बोलो, मंजूर है? वायदा करो?"[7] मौलवी के लिए पाली उर्फ इल्ताफ़ एक संख्या मात्र है, जिससे उनके धर्म का संख्याबल बढ़ता है। लेकिन शकूर और जैनब के लिए वह पुत्र है, जिसे उन्होंने धर्म और मज़हब की दीवारों को लांघ कर अपनाया था, वर्षों तक जतन से पाला–पोसा था। पाली को हिंदुस्तान लाने के बाद अचानक उस अबोध बालक की दिनचर्या बदल तो न जाती। इसलिए जब वह ससमय नमाज़ पढ़ने लगता है तो मनोहरलाल के घर विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पिता बचाव में कहते हैं कि "उनका अपना कोई बच्चा नहीं था, पर उन्होंने इसे पूरे सात साल तक छाती से लगाकर रखा है। मैं तो जनम–जनम तक उनका अहसान नहीं भूल सकता।"[8] इसके प्रतिक्रियास्वरूप गाँव का चौधरी और धर्म का मौलवी सरीखा ठेकेदार लगभग चीखते हुए कहता है, "लड़के को मुसलमान बनाकर भेजा है, फिर भी उनकी सफाई दिए जा रहे हो।"[9] पिता की नज़रें अपने पुत्र की सलामती देख पाती है लेकिन धर्म का ठेकेदार यह देखने में अक्षम है कि भयानक दंगों और हिंसा के बीच भी शकूर और जैनब ने उनके बच्चे को पुत्रवत प्रेम से पाला, सुरक्षित रखा। चौधरी के आदेशानुसार पाली का मुंडन और यज्ञोपवीत कराया जाता है। जब पाली का मुंडन करवाया जा रहा था, इस कहानी का वह सबसे मार्मिक दृश्य है। यथा: "जितनी देर तक मुंडन होता गया, बच्चे की झुकी गर्दन के नीचे हल्की–हल्की सिसकियों की आवाज आती रही। एक बार लड़का घबराकर उठ खड़ा हुआ और 'अम्मी!अम्मी! अब्बा जी! चिल्लाता हुआ आँगन की दीवार के साथ सट कर खड़ा हो गया। वह अपनी बड़ी आँखों से चौधरी की ओर इस तरह से देख रहा था, जैसे कोई त्रस्त हिरन शिकारी की ओर देखता है।"[10]

प्रश्न यह नहीं है कि पाली का धर्म क्या होना चाहिए था बल्कि प्रश्न यह था कि उसे घृणा ने नहीं बल्कि प्रेम ने पाला था। वह प्रेम था जिसके कारण पाली वापसी के दौरान अपनी रूमी टोपी फेंक दिए जाने पर फूट–फूट कर रोता है। वहाँ कोई आँखें तरेरता मौलवी न था, उससे ऐसा करवाने को। लेकिन सांप्रदायिक नजरिया संबंधों को मानवीय स्तर पर न देखकर धार्मिक स्तर पर ही देखने को बाध्य होता है। वास्तव में धार्मिक कट्टरता मनुष्यों से मनुष्यता का हरण कर लेती है। यही कारण है कि दंगों में लोग अपने पड़ोसियों को भी नहीं पहचानते, उन्हें लूटते–पिटते हैं! पाली का पात्र दो धर्मों को करीब लाने वाला सेतु हो सकता था। दोनों धर्मावलंबियों के माता–पिता कितने एकसमान होते हैं, दोनों कितने करीब हैं बतौर अभिभावक, इसका जीता–जागता प्रमाण है पाली। लेकिन धर्म के ठेकदारों ने जैनब और शकूर के समूचे प्रेम को घृणा घोषित कर दिया। जैसा कि मौलवी ने पाली को धर्मांतरित करा के किया था। जब शकूर दंपति ने बच्चे को उसके वास्तविक पहचान के साथ स्वीकार कर लिया था तो उसे क्योंकर मुस्लिम बनाया गया!

करुणा को ईश्वरीय गुण माना गया है। पाली कहानी को पढ़ते हुए यह सवाल पाठकों के मन में जरूर उठता है कि ये कैसे धर्म के पहरेदार, खैरख्वाह हैं, जो सबसे पहले करुणा को ही कुचलते हैं!

दुनिया के सारे बच्चे एक–से हैं। पाली कहानी से यह स्वयंसिद्ध हो जाता है कि दुनिया के सारे माता–पिता एक–से हैं। इसलिए दुनिया के सभी मनुष्य समान हैं। संवेदना के स्तर पर बिल्कुल एक! ये धर्म और मज़हब की दीवारें कृत्रिम है। इति!

सन्दर्भ–सूची :

1. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–11
2. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–14
3. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–15
4. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–16
5. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ– 18
6. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–26
7. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–27
8. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–30
9. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ–30
10. साहनी, भीष्म, पाली, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण –2018, पृष्ठ– 31